पंचपचीसी ॥

जिसमें

महिमापचीसी, ज्ञानपचीसी, गोबिन्दनामापचीसी, प्रश्नोत्तर पचीसी, आनन्दपचीसीहैं

महिमापचीसी में भगवान्‌केनाम की प्रशंसा व ज्ञान पचीसीमें ज्ञानोपदेशकवार्त्ता व गोबिन्दनामापचीसी में गोविन्दगुणानुवाद-आनन्दपचीसीमें जगज्जालसे निर्मुक्तहो आनन्द रहनेकावृत्तान्त व प्रश्नोत्तरपचीसीमें गुरुशिष्यसम्वादसे देहसम्बान्धित प्रश्नोत्तर वर्णितहैं

जिसको

रतलामप्रदेशनिवासी निम्बार्कमतानुयायी श्रीमहन्त रामानन्द चतुरदासने स्वमानुसोल्लाससे भगवद्भजनानन्दियों के निमित्त निर्मित किया

बाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्धसे

प्रथमबार

लखनऊ

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी

जनवरी सन् १८९० ई०

अथ श्रीमहिमापचीसीप्रारंभः॥

सोरठा॥

श्रीजीश्रीजगदीश ईशसकलब्रह्माण्डके॥ चतुराबिस्वाबीश कोटिकोटिदण्डवतकर १॥ कबित्त॥ कोटिकोटि सन्तगुणगावतगोबिन्दतेरे कोटिकोटिब्रह्मासेबतावेंतो हिंबैनमें। कोटिकोटिशम्भूऔरशेषतेरानामजपें कोटिकोटिनारदगुणगावतहैंचैनमें॥ कोटिकोटिगिराऔगणेशतेराजापजपें कोटिकोटिसुरपतिचलायेहैंऐनमें। कहे कबिचतुरदासतोसमत्रिलोकनाथ दूसरेनदाताकोई आवतहैनैनमें १ कोटिकोटिशशिसूरतारेहैंरचायेआप कोटिकोटिभांतिनब्रह्माण्डकोबनायाहै। कोटिकोटिचोट मारिलोटपोटाकियेदैत्य कोटिनसेरावणलेधूरिमेंमिलायाहै॥ कोटिकोटिगोपीऔरग्वालनपैरीझेनाथ कोटिनजनभक्तकोलेपालकीचढ़ायाहै। गावैगुणचतुरदास श्वासश्वासनामतेरा कोटिसनकादिसेलेतेरागुणगाया है २ कोटिकोटिधामऔमुकामगऊलोकतेरा कोटिको

टिमहिमाहैवृन्दाबनग्रामकी । कोटिकोटिशेशऔसुरेश
औनरेशकोटि कोटिमुनिजनकोहैओटतेरेनामकी ॥
कोटिकोटितीरथमेंदर्शकोदिखायोआप : कोटिभांतिरी
तिराखीद्रौपदिनिजभामकी । गावैगुणचतुरदास मा
नतहूंतोहिंगोपाल कोटिहूनजानतहैंतेरीप्रतिपालकी ३
कोटिकोटिराजाऔररानीऔसेठानीसानी किरोड़ोंहीरा
गरङ्गजगमेंमचायाहै । कोटिकोटिपर्वतपैरचीहरियाली
आप कोटिकोटिहराबागनिमिषमेंसुखायाहै ॥ कोटिकोटि
पहाड़ननहरैंचलाईनाथ कोटिकोटिभरेतालनीरहूनपा
याहै । गावैगुणचतुरदासआशहैतिहारीलाल तेरेबि
नझूठीसबमाततातकायाहै ४ कोटिकोटिग्रामकोबना
येअलीशानशहर कोटिअलीशानकोलेमिलायेहैंधूरमें।
कोटिनसहायकरडूबतउबारलीन्हे कोटिनकोआपहीने
डुबायेलैपूरमें ॥ कोटिनकोएकसेअनेकलौदिखायदेत
कोटिनकेएकहूनराख्योहरिमूरमें । गावैगुणचतुरदा
सधन्यहैतिहारीकला आपहीअनेकह्वोयआवतहौनूर
में ५ कोटिनकोद्रव्यदेइहुंडियांचलावोनाथकोटिनकोद्र
व्यछीनिधूरमेंमिलावोहो। कोटिनकोछत्रदेइराजाजगजी
तकरोकोटिनकोराजछीनिदानेमँगवावोहो ॥ कोटिनको
चाकरीमजूरीदेइपालोलालकोटिनपैकोपकरिखरपैचढ़ा
वोहो ॥ गावैगुणचतुरदाससुनोहोगोपाललाल कोटिन
कोकैनिहालपालकीबिठावोहो ६ कोटिकोटिचतुरको
चूतियाबनायदेत कोटिकोटिमूढ़नकीमहिमाबढ़ावोहो।
कोटिकोटिशूरनकोरणमेंभगायदेत कोटिकोटिकायरको

जंगमेंजितावोहो ॥ कोटिकोटिकामिनकीकामनाबनाय देवो कोटिकोटिकामिनकीचामड़ीतुड़ावोहो । गावैगुण चतुरदासाकिंकरगोपालतेरो कूरऔरशूरनकोआपहीब नावोहो ७ कोटिनकोदानदैकैमानतोबढ़ायदेत कोटिन कोज्योतिषमेंजोरतोदिखायदो।कोटिनकोयोगभोगरोग हकीमातदेत कोटिनकोबेदसहजहिंमेंपढ़ायदो॥ कोटि नकोरीभिभक्तिभावदेअनंदकरो कोटिनकीप्रकृतिल्ले न्यायमेंबढ़ायदो । गावैगुणचतुरदासतातमातनाथ मेरे दंभिनकोनाममेटिकूपमेंभरायदो ८ कोटिकोटियोगी औरसिद्धतेराध्यानधरें कोटिकोटितेरेकाजराखकोरमा वेहैं । कोटिकोटिसेवाऔरसुमिरणबढ़ावेंतेरी कोटि मिल्लतेराउपदेशहीवतावेहैं ॥ कोटिकोटिसन्तजटाजूट रहैंतोपरलाल तेरेहीतिलककोलैशीशपैचढ़ावेहैं। गावै गुणचतुरदासदासनकोदासतेरो कोटिनामिलसन्तभक्त नामकोवढ़ावेहैं ९ कोटिकोटिविप्रतेरेहेततिहुँकालजपैं कोटिभांतिगायत्रीलेंतेरेहेतगावेहैं । कोटिकोटियज्ञदान मानतेरेनामहूको कोटिकोटिकथातेरेनामकीसुनावेहैं ॥ कोटितेरेनामपैगऊमुखीलैजपैंजाप कोटिकबिविप्रगुण नयेलैबनावेहैं । गावैंगुणचतुरदासरत्नपुरीकरनिवास राधामनहरणचर्णशीशतोनवावेहैं १० कोटिकोटिका जतेरेआसरेबनावेंसन्तकोटिकोटिकाजकीहैलाजमहारा ज़को । कोटिकोटिभांतिसेउपासनाअनेकलेत कोटि भांतिसेचलावेंज्ञानकेजहाजको ॥ कोटिकर्मटारकेबनाय देवोपारषद कोटिकोटिभांतिगुणगावतलेझांजको । गा

वैगुणचतुरदासब्रह्ममनमोहनको कोटिकोटिभांतिव
हराखैममलाजको ११ किरोड़ोंहीमोगरागुलाबगुलदा
वदीको किरोड़ोंहीचमेलीश्रौचरुपाहूबनायेहैं। किरोड़ों
हीपुष्पलैबगीचेरचवायेलाल किरोड़ोंकमलफूलताल
मेंलगायेहैं॥ किरोड़ोंहीमेवामिष्टान्नयहांश्रानधरे किरो
ड़ोंहीजामकेलपेंड़हूपैछायेहैं। गावैगुणचतुरदासधन्य
हौबिहारीलाल किरोड़ोंहीकन्दहरिजमींमेंउपायेहैं १२
किरोड़ोंहीपक्षीकोकिलाऐसेबनायहरिकिरोड़ोंहीसिंहैबन
बीचमेंबनायेहैं। किरोड़ोंहीअश्वगजधेनुकोबनाईआप
किरोड़ोंपरंदानिजश्राबबीचछायेहैं॥ किरोड़ोंमंग
रमीनदादुरबनायानीर किरोड़ोंहीनागजमींबीचलेउपा
येहैं। गावैगुणचतुरदासखेलतोअनेकरचे किरोड़ों
केबीचसृष्टिगरुड़पंखगायेहैं १३ किरोड़ोंहीमेदिनीमेंहि
रनकीखानिकरी किरोड़ोंहीमेदिनीमेंमुक्ताउपजायाहै।
किरोड़ोंमेदिनीमेंनीलमपुखराजखानि किरोड़ोंहीमेदि
नीमेंसोनरूपछायाहै॥ किरोड़ोंहीमेदिनीमेंतांबाअरुलो
हाहोत किरोड़ोंहीमेदिनीमेंअन्नकोउपायाहै। गावै
गुणचतुरदासगल्लकागोबिंदआप कोटिकोटिरूपहरि
आपनेदिखायाहै १४ किरोड़ोंबादलअरुबिजलीघ
नघोरशोर किरोड़ोंहीमेघमालआपनेरचाईहै। किरोड़ों
हीबद्दलसेनीरहूकीसरिचलेकोटिदेशहूंपैरीभिझ्भरिलैल
गाईहै॥ कोटिकोटिभांतिकेनगारेघनघोरबजेकोटिदेश
बर्सकोटिदेशलेसुखाईहै। गावैगुणचतुरदासप्यारे
मनमोहनको कोटिप्रभुताईमेरेहियेबीचछाईहै १५

कोटिकोटिमेघऔमलाररागभैरवसेकोटिकोटिशिरीराग दीपकदिखायाहै। कोटिकोटिभैरवीखम्माचरागकाफिहू को कोटिकोटिकालिंगड़ोरागगौरीगायाहै॥ कोटिकोटि मालकौसमारूऔबंसतफाग कोटिकोटिधनाशिरीआ सावरीछायाहै।गावैगुणचतुरदासरागरंगआपरचे किरो ड़ोंहीरागमेंअनेकरंगआयाहै १६ कोटिकोटिरबिसोम ग्रहहूप्रकाशकरें कोटिकोटिमंगलकोआपनेबनायाहै। को टिकोटिबुद्धसेअनेकबीरआपरचे कोटिकोटिबृहस्पति आपहीकोगायाहै ॥ कोटिकोटिशुक्रऔशनीचरबनाये लाल कोटिकोटिराहुऔरकेतुछबिछायाहै । गावैगुण चतुरदासआपनेअमरकिये कोटिकोटिभांतिनसेमानहू बढ़ायाहै १७ कोटिकोटिमीनमेषवृषहूबनाइराशि को टिकोटिमिथुनपैकर्कराशिभायाहै । कोटिकोटिसिंहक न्यातुलापैत्रिलोकप्यारे कोटिकोटिबृश्चिककेलग्नठहरा याहै ॥ कोटिकोटिधनमकरकुंभहूबनायेलाल कोटिको टिराशिहुक्मआपकाउठायाहै । गावैगुणचतुरदासद्वा दशहूराशिरची किरोड़ोंहीखेलऐसेआपनेरचायाहै १८ किरोड़ोंहीअश्विनीऔ भरणीकृत्तिकानारि किरोड़ोंही रोहिणीऔमृगआदरादीहैं । किरोड़ोंहीपुनर्बसुपुष्यअ श्लेषामघा किरोड़ोंहीपूर्बाऔउत्तराहस्तादीहैं ॥ किरोड़ों हीचित्राऔरस्वातीबिशाखानक्षत्र कोटिअनुराधाऔर श्रेष्ठाजेष्ठादीहैं । चतुरदासमूलपूर्बाऔरउत्तरादी श्रौण धन्यशतपूर्बउत्तरादीरेवत्यादीहैं १९ किरोड़ों हीलड़ीऔकिनारीरेशमादिआदि कोटिभांतिजरीकम

खाबकोरचायाहै। किरोड़ोंहीतासजामदानीऔमलीना
टूलकिरोड़ोंहीमलमलमलीनाबनायाहै ॥ किरोड़ोंहीछी
टऔदरेसीलोटजालीलाल किरोड़ोंहीथानहरिआपस
जवायाहै। गावैगुणचतुरदासप्राणिनकेहेतनंाथ ऐसेऐसे
अलंकारआपनेउपायाहै २० किरोड़ोंहीलालरङ्गपीला
औसफेदस्याह किरोड़ोंहीलीलाऔरधानियाबनायाहै।
किरोड़ोंहीकेसरीगुलाबीऔरश्यामरंग किरोड़ोंहीबसंती
उन्नाबीआसमायाहै ॥ किरोड़ोंहीमोतियाऔसोसनी
सबजरंग किरोड़ोंहीशोभाजंगालीरंगछायाहै। गावैगु
णचतुरदासरंगतोअनेकरचे मेरेतोमोहनरंगमनमेंसमा
याहै. २१ किरोड़ोंहींयोगीजनध्यानतेरोधरेंहिये कोटि
ब्रह्मदंडीनामतेरालेमनायाहै। किरोड़ोंहीगिरिनारीकोटि
बनकेबिहारी कोटिपदपूजहारितोहिंकोरिझायाहै॥ को
टिऋषिराजमहाराजगंगयमुनापै लेतहैंगोबिन्दनामवे
दमेंबतायाहै। गावैगुणचतुरदासकहांलौंपुकारकहूंको
टिकोटिभांतिकीअनेकतेरीमायाहै २२ किरोड़ोंहीचन्द्र
सामुखारबिन्दकृष्णतेरा किरोड़ोंहीसूर्य्यकेसमानतेरी
शोभाहै। किरोड़ोंमणिनकीझलकहैमुकुटबीच किरो
ड़ोंब्रह्मांडतेरेतेजहीनेथोभाहै ॥ किरोड़ोंहीलक्ष्मीतिहा
रेपदचापिरहीं किरोड़ोंहीदेवतेरेनामहूंपैलोभाहै। गा
वैगुणचतुरदासआशब्रजराजतेरी तोकोनहींमानेताको
लाखधूरधोभाहै २३ किरोड़ोंहीहाथजोरिकृष्णकोप्रणा
मकरूँ किरोड़ोंहीबारशीशकृष्णचरणनाऊंगो। किरोड़ों
हीनामाशिरीराधामनमोहनके कोटिध्यानकरकेमैंतेरेही

कोचाऊंगो ॥ कोटिधजराजामहाराजामेरेकृष्णजकी किरोड़ोंहीरीतिभांतिकरकेरिझाऊंगो । गावैगुणचतुर दासदासनकोदासतेरो तेरेगुणगायहरीतोकोचितलाऊं गो २४ बिक्रमीहैचन्द्रग्रहताहीपैत्रिलोकनिधिजेष्ठवदी पञ्चमीकोप्रेमकरगाईहै।पायाहूंश्रीब्रह्मरूपशिरीजीश्री निम्बारकतिनहींकोबोधलैमैंभक्तिकोउपाईहै॥ गाईनिज पचीसीप्रसिद्धरूपमहिमाको श्रीजीघनश्यामनामप्रेम हूसेधाईहै । गावैगुणचतुरदासदाससबसन्तनको प्रा णहूसेप्यारेमेरेसांचेयदुराईहै २५ ॥

इतिश्रीजम्बूद्वीपेभरतखंडेअवन्तीमहाक्षेत्रेरत्नपुरीमध्ये वैष्णवहरिव्यासीचतुरदासविरचितेनिम्बार्कप्रताप श्रीमहिमापचीसीसमाप्तम् ॥

अथ श्रीआनन्दपचीसीप्रारम्भः ॥

कुण्डलिया छन्द ॥ श्रीश्रीश्रीसर्वेश्वरपरब्रह्मकरतार । गुरुमेरेनिम्बारक सांचेसिरजनहार ॥ सांचेसिरजनहार मोक्षकीनावचलाई । चढ़ियेसन्तमहन्त पदारथमुक्तीपाई ॥ चतुरदासनिम्बारक निर्मलपायाज्ञान । नगरसलेमाबादमें हैगुरुकाअस्थान १ आयेथेसुखरातमें अबआईदुखरात । जावेंगेदुखरातमें कछूनआवेसात ॥ कछूनआवेसात नाथगिरिधरकोगाले । लखचौरासीयोनि तेरीमहराजाटाले ॥ चतुरदासमतमानरे मोहमायाकीजाल। निश्चयकरकेजानलेपूरणश्रीगोपाल २ जबलगदीपकतेलहै तबलगज्योतिजरंत। तेलखुटेबातीबुझै मूरखशोचकरंत ॥ मूरखशोचकरंततेलबिनहोयअँधेरा। जरतज्योतिकोदेखिकरतहैमेरामेरा ॥ कहैचतुरदासनिजहंसको खेलोसुन्दरखेल । बिनपूजीठहरेनहीं यहकंचनकामेल ३ मोममहलकेबीचमें जरतीज्योतिअखण्ड। नापिघलेनाहिंनजले यहदेखाब्रह्मण्ड॥ यहदेखाब्रह्मण्डताहिमेंराजारानी। असुरदेवनरबसे ताहिमेंहैंनिर्बानी ॥ कहैचतुरदासहंसाचलत बासउठेब्रह्मण्ड । प्रलयहोयगीभजहरी झूठकपटकोछण्ड ४ यहगेरादरियावहै उठतींअजबतरंग। कोइतरंगमोंमोक्षकी कोइमेंउठैकुरंग ॥ कोइमेंउठैकुरंग सोइलेनरकाजावे । को

इतरंगगम्भीर परमपदहंसापावे॥ कहैचतुरदासदरिया
वमें मूरखगोताखाय । कालमच्छतोकोगिलै जपोजाप
यदुराय ५ पांचरत्नप्रच्चीसंमिलि बन्योभर्मकोभूत ।
तामेंथानाब्रह्मका जानतहैंकोइदूत ॥ जानतहैंकोइदूत
भूतपांचोंबिरलावें । अपनेअपनेदेश अन्तपांचोंउठि
धावें ॥ चतुरदासमतगर्बकर इनशूरनकेसंग । भजपू
रणगोपालको लेगुरुजनकारंग ६ देखगुबारागैबका
चलतपवनकेसंग । रंगदेखिसंसारका होजावतहैदंग॥
होजावतहैदंगभंगजलपीकेमिंता । आगेकीसुधिभूलि
करैनहिंहरिकीचिन्ता ॥ चतुरदासभजकृष्णकोयहधूवां
कीपोट । बिखरजायगीनिमिषमें फूटजायगाकोट ७
यकराजाहैअतिबली लियेहाथशमशेर । शिवब्रह्मांको
लूटिये रखैदेवकोघेर ॥ रखैदेवकोघेरनरनकीक्याहैगि
नती । योगीजनमुनिसन्तभयेहैंतिनकेभरती ॥ चतुर
दासकंदर्पबल व्यापिरह्योचहुँदेश । सकलसृष्टिमेंना
वचै कामहिप्रकटदिनेश ८ कामक्रोधमदलोभये रजो
तमोउंकार । कहँलोंमैंवर्णनकरूं मानमोहललकार ॥
मानमोहललकारयाहिमेंअरभेपूरे । मेरीतरफगुरुदेव
सत्यनिम्बारकशूरे ॥ चतुरदासगोविंदभज नरदेहीको
लाभ । जन्मसुबीताजातहै टूटजायगोआभ ९ आंधी
आईकालकी आगउड़अनन्त । बचेनसाँवतशूरमा यो
गीयतीमहन्त ॥ योगीयतीमहन्त गयेउड़उड़केहंसा ।
कोईगयोगोलोककोईफंदेयमफंसा ॥ चतुरदासभज
कृष्णको अवसरबीत्योजाय । आंधीमेंउड़िजायगो ना

कोउकरैसहाय १० अहोविवेकीराजवा घटाचढ़ीघन घोर। नेहनीरबर्षनलग्यो मोहमचायोशोर॥ मोहम चायोशोरचेतशिरकालहिगज्जै। बन्योबिगड़िहैमाठप वनचलसीरीबज्जै॥ चतुरदासनिजगारकाबनाकलेवर सार। कालघटाकोदेखके सुमिरोसत्यमुरार ११ भँवर गुफागंभीरमें भीतरभरीअँगार। रक्तमांसकेऊपरे जि लेकरीकरतार॥ जिलेकरीकरतारलगायेनवलखरू वा। जामेंबैठाएकअनोखासुन्दरसूवा॥ चतुरदासधर ध्यानको भजसूवाहरिनाम। ऊठतबैठतहारिभजोजोलौं यहांसुकाम१२यहशीशीसुन्दरबनीराखेरहैनभिंत।यत्न कियेजुड़ियेनहीं फूटेकरोनचिंत॥ फूटेकरोनचिंत कांच कीअजबबनाई। भरीमाहिंदुर्गंध प्रकटयेनीकीभाई॥ कहैचतुरदासयापैगरब कबहुंनकरियेकोय। होनहार कबहुंनटरै होनीहोयसुहोय १३ हेतृष्णातूबावरी अ मतरहैदिनरात। लिखाअंकनिजभालमें वहआवे गाहात॥ वहआवेगाहात नाथदेवेगाजबहीं। आ वेछप्परफाड़ मिलैगातोकोतबहीं॥ कहैचतुरदासधि क्कारहै तृष्णातोहिंअनंत। शीलसबधारणकरो बनके रहोमहंत १४ यहहंडानिजगारका भड़भड़ायफूटंत। मरघटमेंतोहिंडालही कालरावलूटंत॥ कालरावलूटं त रहैनहिंतेरामेरा। हंसालेगाबांट करैगाजंगलडेरा॥ चतुरदासअबचेतके मानोश्रीगोपाल।मोक्षमिलैइनके भजे तोहिंनपरशैकाल १५ भक्तिस्वरूपीभूमिमें बोउपु एयकाबीज। परमारथकीओटकरमेटोशाखाधीज॥ मेटो

शाखाधीज लगेंफलमुक्कीभारी । वाफलकोपहिंचानच
ढ़ोबैकुंठमैंभारी ॥ कहैचतुरकल्पवृक्षकी छायाहैगम्भीर।
तजथूहरनिजमानको मनमेंधरलेधीर १६ आंखमीचके
देखिये दृष्टिनआवेएक । तातेगुरुगोविंदकीमनमेंधरिले
टेक ॥ मनमेंधरिलेटेकवेषकीलज्जाराखें । ऐसेदीनदया
लुजिन्हैंनिगमागमभाखें ॥ चतुरदासअबदेखले जीव
तआवेपास । इनकोफोकटमानके बनेरहोनिजदास
१७ मातपितातेरेनहीं तूभीउनकानाय । अपनेअपने
स्वारथी प्रीतिकरेंसबआय ॥ प्रीतिकरेंसबआय सकल
स्वारथकेमिंता । बिनस्वारथसुनहंसकरैंनहिंतेरीचिंता ॥
चतुरदासयहहाटहै हुइयेबाराबाट । भक्तिसरीखीसुर
सरी न्हावोतिनकेघाट १८ मनकीतोभट्ठीकरो तनकी
करोकड़ाव । पाकसँभालोज्ञानका ईंधनपापजलाव ॥
ईंधनपापजलाव बनावोनिर्मलचूरा । तेरापापधुलि
जाय तभीतूहोइयेशूरा ॥ चतुरदासधरध्यानको अप
नापियपाहिंचान । शिरीकृष्णमहराजयेहैंपूरणभगवान
१९ वहँसेआयाकौलकर यहँतूरह्योबिसार । आगेकी
सुधिभूलिया मूरखचेतगवांर ॥ मूरखचेतगवांर
लारनहिंतेरेआवे । होइहैंतेरेपास सकलमिलमिल
केखावे ॥ चतुरदासमालिकहरी तिनकाधरलेध्यान ।
श्रीराधामनहरणये हैंपूरणभगवान २० हेमनमूरख
बावरे मानमानगोबिन्द । इनहींनेजगकोरचा इन
हींरचियाचंद ॥ इनहींरचियाचंद अजबब्रह्मांडबनाया।
वेदउपनिषदव्यास प्रेमकरइनकोगाया ॥ कहैचतुर

दासनरबावरे इनकोकरोप्रमान । चारोंपदतोकोसि लैं निश्चयभजभगवान २१ हेप्यारेसर्वेश्वर तोसे करूंपुकार।सुखदेवोसंसारमेंमेरेसिरजनहार॥मेरेसिर जनहार सायकेकरनेवाले । देहुपदारथचार दास कोश्रीगोपाले ॥ चतुरदासशरणागत तोहिंशरणैकी लाज।तेरेभरोसेनाथजी रहाजगतमेंगाज २२ धन्य धन्यनिम्बारक धन्यधन्यंगोपाल । धन्यधन्यश्रीजी प्रभू निरखतकरोनिहाल ॥ निरखतकरोनिहाल दास गुणतेरागावे । तोबिनतजेविवेक आपकोनिश्चय ल्यावे ॥ चतुरदासधनिरामको गंगचरणशिरनाय । रत्नपुरीमेंआयके प्रभुजीकरौसहाय २३ राधाराधा मानरे कृष्णकहौंप्रियंजान । तेरादुखसंकटहरैं तब तूनिश्चयसान॥तवतूनिश्चयमान हजारोंपरयेरीजे । खीजेकरेंबिनाश ताहितेशरणालीजे ॥ चतुरदासधरि ध्यान ज्ञानपच्चीसीगाई । रत्नपुरींरतलाम मुल्क मालवकेमाई २४ चंद्रग्रहतापरत्रय तापरखण्डब खान। शुक्लपक्षवैशाखमें कूर्मजयन्तीजान । कूर्म जयंतीजान दियामनकोसमझाई । माफ़करोतकसीर सकलमेरीयदुराई ॥ कहैचतुरदासभगवानका प्रेमीप्रे मलगाव।गायसकेतोगायले श्रीगिरिधरजीगाव २५॥

इतिश्रीभरतखंडेअवंतीमहाक्षेत्रे रत्नपुरीमध्येवैष्ण वहरिब्यासीचतुरदासविरचिते निम्बार्कप्रताप ग्रंथआनन्दपचीसीसमाप्तम्॥

अथ श्रीगोविन्दनामापचीसीप्रारम्भः ॥

दोहा ॥ श्रीराधामनहरणजप ब्याधीदूरनशाव । या
दकरोनिम्बारक गोबिन्दकेगुणगाव ॥ छंद अरिल्ल ॥ अ
ष्टपहरदिनरैनकृष्णकोगावता । श्रीजीकोशिरनायपरम
पदपावता ॥ बिनानिम्बारकगुरूज्ञाननहिंचावता । प
रहांचातुरप्यारेमनपक्षीसमभावता १ कोइनानकतान
कबौधपैगंबरचावता । कोइपाबूआबूरामपीरकोध्याव
ता ॥ कोइशेशमहेशसुरेशचरणशिरनावता । परहां
चातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनहिंपावता २ कोइबेदवे
दांतबतायजगतभरमावता । कोइसाखीशब्दपढ़ायहं
सबहँकावता ॥ कोइब्रह्मज्ञानकोगायतत्वबतलावता।
परहांचातुरबिनभंजेगोबिन्दमोक्षनहिंपावता ३ कोइरा
मसनेहीहोयखेड़ापैजावता। कोइसायपुरामेंबैठमशानेगा
वता॥कोइसतसाहबकब्बीरकहीपत्रितावता। परहांचातुर
बिनभजेगोविन्दमोक्षनहिंपावता ४ कोइदेवीभैरवपूजिबि
भूतिरमावता। कोइआपापंथचलायधर्मकोढावता॥कोइ
आपहिआपागायज्ञानबतलावता। परहांचातुरबिनभजे
गोविन्दमोक्षनहिंपावता ५ कोइचौकैबैठपुजायआपही
खावता। कोइझांझमृदंगबजायसिद्धकहलावता॥ कोइ
लम्बीटोपलगायगर्बमेंछावता। परहांचातुरबिनभजेगो
विन्दमोक्षनहिंपावता ६ कोइपोथीपुस्तकबांचि द्रव्य

कोचावता।कोइखूबशरीरोतादेखहाथलचकावता॥ कोइग्र
हगोचरपुजवायअंतपछितावता॥परहांचातुरबिनभजेगो
विन्दमोक्षनहिंपावता७कोइचेलाचेलीमूड़िगुरूकहलाव
ता। कोइआटाबेचेमूढ़नरकमेंजावता ॥ कोइखूबरसोयों
देखिमूड़मुड़वावता। परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्ष
नहिंपावता ८कोइऊंचाऊंचामहलअँटावनवावता।कोइ
हाथीघोड़ेबैलऊँटमोलावता॥ कोइबस्तरहीरालालमोल
मँगवावता।परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनाहिंपावता
९कोइपरसुन्दरकोदेखिजियाललचावता।कोइपरनारीसे
हेतकरीपछितावता॥ कोइव्यभिचारिणिकेसंगश्वानज्यों
धावता॥परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनाहिंपावता१०
कोइढोलबजायबजायभक्तिबतलावता। कोइतनमनधन
कोढांकिहरीकोगावता ॥ कोइदंभिनकासावेषभक्तकहला
वता। परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनहिंपावता ११
कोइपरकीनिंदाकरीकभीपछितावता । कोइदुष्टनकेसाथ
धकानितखावता ॥कोइनितहीतेलफुलेलअंगलिपटाव
ता।परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनाहिंपावता१२ को
इलुच्चलौंडकेसंगमौजकोपावता । कोइबनछैलाआपब
दनफैलावता ॥ कोइदंभिनकोछांड़िसुढंगकैजावता ।
परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनाहिंपावता १३ कोइ
मनमेंधरेयकीननामकोगावता । कोइसबसेमीठाबोल
पदारथपावता ॥ कोइसबसेटेढ़ाहोयबुराईलावता ।पर
हांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनहिंपावता १४ कोइबुद्धी
आधीनबुद्धिफैलावता । कोइबुद्धिमानमहराजदुष्टकै

जावता ॥ कोइज्ञानध्यानपहिंचानचरणरजचावता ।
परहांचातुरबिनभजेगोविन्दमोक्षनहिंपावता १५ कोइ
चरणकमलकोछांड़िचपेटैंखावता । कोइआदिदेवबि
सरायनयेकोचावता ॥ कोइगुरुगोबिन्दकोछांड़िनरकमें
जावता॥परहांचातुरबिनभजेगोविंदमोक्षनहिंपावता१६
कोइशत्रूसेयाकीनकरीपछितावता।कोइपरिणामीपरिणा
मआनव्रतलावता ॥ कोइतेरामेराकरैअंतनहिंआवता।
परहांचातुरबिनभजेगोबिंदमोक्षनहिंपावता १७ येदेख
तमाशासबैचतुरछिटकावता। श्रीरागगंगपरतापभजन
नितगावता ॥ मैंशहरसलेमाबादहियामेंचावता । पर
हांचातुरश्रीजीकेपरतापमोक्षनिजपावता १८ तूगाय
सकैतोगावपरमप्रियबावरे ।जाकीअनहदबाजैबेणुशर
णमेंआवरे ॥ तेरिआवागमनमिटिजाययहीपदगावरे।
परहांचातुरश्रीगोविंदको मतिबिसरावरे १९ कोइ
लाखकहौमैंएकहियेनहिंलावता । मैंसर्वेश्वरकोगायपर
मपदध्यावता ॥ मैंवृंदाबनगोलोकहियेमेंचावता । पर
हांचातुरश्रीजीकेपरतापमोक्षनिजपावता २० भजबि
श्वपालगोपालसत्यपहिंचानिये । श्रीसर्वेश्वरकोपारब्र
ह्महरिजानिये ॥ श्रीनिम्बारकमहराजसत्यकरमानिये।
परहांचातुरपयपानीकोप्रेमप्रीतिसेछानिये २१ मेरेमन
मोहनमहराजरहेब्रजदेशमें । मैंतिनशरणनकोपायरह
तहौंएशमें ॥ मैंसंतोंकोप्रियजानरहूँजिनभेशमें। परहां
चातुरअष्टपहरदिनरैनरहूँतवलेशमें २२ निम्बारकनि
र्बाणनामकोगाइये। परमपदारथहाथजीवतेरेआइये ॥

तनमनप्रेमलगायहंसहरिगाइये । परहांचातुरपार ब्रह्मगुरुदेवहंसतूचाइये २३ मनतूप्रेमबढ़ावकृष्णमन मायरे । बैठोआसनडार जायनहिंबायरे ॥ चेतभजौ गोपालउमरयहजायरे । परहांचातुरदिलकाखोलकिवां ड़कृष्णकोगायरे २४ एकईशनवदीपतीनग्रहसोवता । कृष्णअँधेरीतीजजेष्ठकीजोवता ॥ बिनगोबिंदकेनाम उमरतूखोवता । परहांचातुरश्रीगोबिंदकोगायपापको धोवता २५ ॥

इतिश्रीजंबूद्वीपेभरतखंडेअवंतीमहाक्षेत्रे रत्नपुरी मध्येहरिव्यासीचतुरदासविरचितेनिम्बार्कप्रता पश्रीगोबिंदनामापचीसीसमाप्तम् ॥

अथश्री प्रश्नोत्तरपचीसी प्रारंभः॥

दोहा ॥ श्रीगुरुचरणमनायकेजन्मसुधारोमिंत ॥ सर्बे इवरकेश्रासरे चतुराभयानिचिंत १ पच्चीसीनिजप्रश्न की मनसूरतिइतिहास ॥ लेइनामगोबिंदका बरणैंचातुरदास २ ॥ छंद झूलनी । मनकाप्रश्न ॥ कौनयादेहमें ज्योतिजगमगजलै कौनयापूरतातेलबाती । कौनसेमहलमें अलखआसनकिया कौनसेब्रह्मकीजक्तजाती ॥ कौनयहँपापअरुपुण्यकरतासही कहौंकौनसेकर्मसे रहतमाती । कहतमनरायचातुरगुणीसमझले कौनयादेहमें कौनपाती १ ॥ गुरूसुरतिका उत्तर ॥ ज्ञानकीज्योतिया देहमेंजगमगे धर्मजीपूरतातेलबाती । कमलमेंआयके अलखआसनकिया बैष्णवीब्रह्मकीजक्तजाती ॥ प्रकृतीपुण्यअरुपापकरतीयहां कृष्णनिजजानकेरहतमाती। सुरतिगुरुकहतहैसमझचातुरगुणी अंशयादेहमेंब्रह्मपाती २ ॥ प्रश्न ॥ कौननेजल्लपैथल्लरचनाकिया कौनने रचेआकाशतारे । कौनकेपूतहैंदेवदानवमुनी कौनकानूरयहँपूरप्यारे ॥ कौननेरचाहैलोकचौदागुणी कौनने शम्भुविधिकाजसारे । कहतमनरावचातुरगुणीसमझले कौनयहँआयकेदैत्यमारे ३ ॥ उत्तर ॥ युगलनेजल्लपैथल्लरचनाकिया युगलनेरचेआकाशतारे । मनूकेपूतहैंदेवदानवमुनी युगलकेनरकीझलकप्यारे ॥ युगलने

रचेहैंलोकचौदागुणी युगलअजशम्भुकेकाजसारे ।
सुरतिगुरुकहतहैंसमभचातुरगुणीयुगलहीआयकेभार
टरे ४ ॥ प्रश्न ॥ कौनसीभूमिकाकौनहीग्रमणी कौनने
खोदकेकौनपाई । कौनसारूपऔकौनसीरंगत कौन
सेरूपकीदिव्यताई ॥ कौननेपरखयेकौनहिरदेधरी कौ
नपैतेजकीपड़ीझाई । कहतचातुरगुणीकौनफलफूलमें
कौनसीशक्तिहैसंगमाई ५ ॥ उत्तर ॥ देहयेभूमिकातत्वही
रामणी धर्मसेखोदकेसंतपाई । वैष्णवीरूपऔसत्र
कीरंगत नाथकेरूपकीदिव्यताई ॥ गुरूजीपरखली
संताहिरदेधरी जगतपैतेजकीपड़ीझाई । कहतचा
तुरगुणीकृष्णयाकेपतौ संगहैशक्तिनिजभक्तिमाई ६
प्रश्न ॥ कौनआभूषणकौनसाजेवर कौनसारंगका
पहरलेंगा । कौनसीचूनरीकौनसीचोलिया कौन
सेपुरुषकीनारिहैगा ॥ कौनसीसेजमेंकौनसंगसोव
ती कौनयासंगमेंमौजलेगा । कहतचातुरगुणीकौन
सीउमरहै कौनयहअमरअहिवातदेगा ७ ॥ उत्तर ॥
शीलआभूषणासत्रकाजेवर ज्ञानगंभीरका पहरलेंगा
संतोषरँगचूनरीधर्मकीचोलिया पुरुषपरब्रह्मकीनारि
हैगा ॥ ध्यानकीसेजमेंभजनसंगसोवती इष्टकेसंग
यामौजलेगा । कहतचातुरगुणीतरुणउम्मरसदा
अमरअहिवातनिजनाथदेगा ८ ॥ प्रश्न ॥ कौनआ
काशअरुकौनपातालमेंकौनकातेजहैजगतमाईं । कौन
रचनाकरैकौनयहँपालता कौनशृंगारताहिंसताई ॥ कौन
यहँपैमरैकौनयहँमारता कौनहोअमरनिजलोकजाई । क

हतचातुरगुणी कौनफलफूलमेंकौनकारूपहैभूपभाई ६॥ उत्तर ॥ शशिसुरआकाशमें शेषपातालमें हरीकातेजसबवस्तुमाई। कृष्णरचनाकरें कृष्णसंहारता कृष्णहीपालताहंसताई॥ देहयहैपैमरैकालयहैमारता दासहोअमरनिजलोकजाई। कहतचातुरगुणीकृष्णफलफूलमें अंशईश्वरतनाभूपभाई १०॥ प्रश्न॥ कामकिसकोकहैंक्रोधकिसकोकहैंलोभकिसकोकहैजगतमाई। मानकिसकोकहैंमोहकिसकोकहैंजीवकिसकोकहैंसत्यसाँई॥ रजोकिसकोकहैंतमोकिसकोकहैं गर्बकिसकोकहैंदेखभाई। कहतचातुरगुणीभेदयाकोकहो कौनसीवस्तुसेईशपाई ११॥ उत्तर॥ मुक्तिनहिंकामसेमुक्तिनहिंक्रोधसे मुक्तिनहिंलोभसेदेखभाई। मुक्तिनहिंमानसेमुक्तिनहिंमोहसेजीवअज्ञाननहिंईशपाई॥ मुक्तिनहिंरजोसेमुक्तिनहिंतमोसे मुक्तिअहंकारकेहाथनाई। कहतचातुरगुणीभेदयाकोयही भक्तिसेमिलैगीमुक्तिमाई १२॥ प्रश्न॥ कौनसामत्तहैकौनसासत्यहै कौनसेनामकोआपगावो। कौनकाज्ञानहैकौनकामानहै कौनसेलोकमेंआपजावो॥ कौनसानामहैकौनसाग्रामहै कौनसेईशकोआपचावो। कहतचातुरगुणीकौनतेरापियाकौनसेइष्टकोआपध्यावो १३॥ उत्तर॥ कृष्णकामत्तहैं कृष्णजीसत्यहैं कृष्णकेनामकोनित्यगाऊं। कृष्णकामानहैं कृष्णकाध्यानहै कृष्णपरतापगोलोकजाऊं॥ कृष्णकाधामहैबिरजमुक्कामहै युगलजगदीशकोनित्यचाऊं। कहतचातुरगुणीकृष्णमेरापिया कृष्णपदकमलमेंशीशनाऊं १४॥ प्रश्न॥ कौनयादेहकामातअरुतातहै कौनयादेहकाभ्रातशु

रा। कौनसेदेशमेंदेहपरकटभईकौनकेतेजसेप्रकटनूरा। कौनयाकोमिलाकौननेतारदीकौनकाहस्तहैशीशपूरा। कहत चातुरगुणीकाहिसेबनरही कौनयातेरहैआजदूरा १५॥ उत्तर॥ मातश्रीगङ्गहैंराममेरोपिता भ्रातघनश्यामानिज सत्यशूरा। शहररतलाममेंदेहपरकटभई रामकेतेजसेप्रकटनूरा। गुरूयाकोमिलादेहकंचनभई गुरूकाहस्तहैशीशपूरा। कहतचातुरगुणीइष्टसेबनरहीकालयासेरहैआजदूरा १६॥ प्रश्न॥ कौननेसुरतिसेग्रंथपैदाकियाँ कौनकेरचेयेबेदचारी। कौनअष्टादशग्रन्थभाषेयहां कौनज्योतिषमताकियाजारी॥ कौननेन्यायबेदान्तभाषायहां कौनभाषारचीरत्नभारी। कहतचातुरगुणीकौनसासत्यहै कौनकेपढ़ेहोयपापछारी १७॥ उत्तर॥ सुरतिसेजोभईसुरतिताकोकहैं हरीकेश्वाससेबेदचारी। व्यासअष्टादशग्रन्थभाषेयहांहरी ज्योतिषमताकियाजारी॥ तर्किनेन्यायबेदान्तभाषामता भक्तभाषारचीरत्न चारी। कहतचातुरगुणीसत्यनिम्बारकहिनामकेपढ़ेहोय पापछारी १८॥ प्रश्न॥ कौननेपाठपूजापरकटकरी कौननेयज्ञकाबोधकीना। कौननेदानअरुमानजगमेंकिया कौननेअमरपुरलोकचीना॥ कौननेमन्त्रअरुतन्त्रजाहिर किया कौननेसत्ययहमत्तलीना। कहतचातुरगुणीकौन भरमावता कौनकेप्रेमसेजगतभीना १९॥ उत्तर॥ ब्रह्मनेपाठपूजाजाहिरकरी बशिष्ठनेयज्ञकाबोधकीना। कर्णनेदानअरुमानजगमेंकिया दासनेअचलगोलोकचीना॥ शंभुनेमन्त्रअरुयन्त्रजाहिरकियाभक्तनेसत्य

यहमत्तलीना। कहतचातुरगुणीदुष्टभरमावता विष्णुके ज्ञानमेंजगतभीना २० ॥प्रश्न॥ कौननेग्रन्थपिंगलबनाया यहांकौननेशिल्पकोकरीजाहर। कौननेभक्तिकोभाववर्णन कियो कौननेभंराहैज्ञानसाहर ॥ कौनसाहाकिमन्याव तेराकरैं कौनसादूततोहिंकरत्तदायर। कहतचातुरगुणी कौनमहराजहैं कौनसाब्रह्महरदम्मगाहर २१ ॥उत्तर॥ शेषनेग्रन्थपिंगलबनायासही विश्वकर्माकियाशिल्प जाहर । आचार्यभक्तिकीसेतुबांधीअली गुरूनेभराहै ज्ञानसाहर ॥ निम्बारकहकइन्साफमेराकरैं ज्ञानवैराग नेकियादायर । कहतचातुरगुणीकृष्णमहराजहैं ताहि केचरणमेंशीशसाहर २२ ॥ प्रश्न ॥ कौनकोमैंभजूँकौनको मैंतजूँ कौनकेआसरेरहूँदाता । कौनकेचरणमेंशीशनाऊं गुरू कौनकीशरणमेंमुक्तिपाता ॥ कौनसंकटहरेंकौनआ नँदकरें कौनकेरागरंगरहूंराता । कहतचातुरगुणीसांचव र्णनकरो कौनसीशक्तिहैसत्यमाता २३॥उत्तर॥ कृष्णकोतु मभजोदंभकोतुमतजो कृष्णकेआसरेरहोआता। कृष्णके चरणमेंशीशनावोप्रिया कृष्णकेनामसेमुक्तिपाता॥ कृष्ण संकटहरैंकृष्णआनँदकरैंकृष्णकेरागरँगरहोराता। कहत चातुरगुणीसत्यश्रीकृष्णहैंराधिकाशक्तिहैसत्यमाता २४ धन्यगुरुदेवहरिधन्यनिम्बारकधन्यसर्वेश्वरशीशनावे । धन्यवैष्णवगुरूधन्यवृंदावनसंतयोगीयतीसिद्धगावे॥ध न्यघनश्यामश्रीजीप्रभूसाम्प्रततोहिपदकमलमें शरणजा वे। दासचातुरकहैनामतेरालहैगुरुनकीकृपातेमौजपावे॥

इतिचतुरदासविरचितेग्रन्थप्रश्नोत्तरपचीसीसमाप्तम् ॥

अथश्रीउपदेशामृतपचीसीप्रारंभः॥

कवित्त ॥ श्रीगोविंदलालतेरानामलेपुंकारिकहूँ तो समात्रिलोकमाहिंदूसरोनदेख्योमैं तूहीहैंनिर्गुणअरुसगुणसर्वत्रमाहिं तेरोलेहियेबीचज्ञानध्यानथप्योमैं ॥ तुही साकारनिराकारनिर्विकारीनाथ मोहनसंतसंगबीचतेरेकोदेख्योमैं । चातुरनेचातुरषटअष्टादशबीचदेख्यो निम्बारकबोधहूसेहियाबीचलेख्योमैं १ तनमनकातीर लेतूसुरतीकीकरकमानज्ञानहूसेतानमारमिरगाकोबाड़ीमें । प्रेमहूकीबाड़ीमेंउजाड़तहैनामवस्तु पापकोस्वरूप मृगारहैतेरीभाड़ीमें॥ भक्तीकीबागरबिचारकेलगायदेवो मिरगाकोपकड़बांधडारदेवोखाड़ीमें । गावतगुणचतुर दासमानरेगोपालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें २ दुष्टनसेदूरहारभक्तनकेहैंसमीप हाजिर हजूरनाथतैसेअग्निकाड़ीमें ॥ आयेगोलोकसेप्रसिद्ध देवनिम्बारक ढूंढ़नतेहाथचढ़ेजैसेमुक्तखाड़ीमें ॥ अनेकतअनन्दयहांदेखरह्योजगतमांझ बैठकेफुलायरह्यो जैसेजीवगाड़ीमें । गावतगुणचतुरदास मानरेगोपाल जीकोमतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ३ गोबिन्दनहींगावैसोआगेपछतावे नरकबीचजावेयमराजपेरै घानीमें । ताहीतेदेखबातजक्ककीप्रसिद्धनाथ लेहुं नामतेराऔउपाधीकोछांड़ीमें ॥ निम्बारकनामकी उपासनासमायरही गुरुकेप्रतापपाईभक्तिनिजगाड़ीमें ।

गावतगुणचतुरदासमानरेगोपालजीको मतिनाबिसार
मूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ४ गुरुकेप्रतापपापतापकोमिटा
योआज गाजरह्योमानसमेंजैसेशेरझाड़ीमें । पायोप्रे
मभारीबनवारीगिरिधारीको ताहीकेप्रतापहंसबैठोहैंअँ
टारीमें ॥ जहांबैठदेखिरह्योसुरतीसेज्ञानगुण निश्चय
करभक्तिब्रजराजहूकीठानीमें । गावतगुणचतुरदास मा
नलेगोपालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें
५ बारबारकहतहूंपुकारगावगोबिंदको ताहीतेमुक्तिमि
लैदेखलोअगाड़ीमें ।मुक्तिमहारानीआधीनभावभक्ती
के श्वासश्वासनामगाऊंतेरावनबाड़ीमें ॥ हरिकोबिसा
रिपूजेभैरवभवानीपीरमिसिरीमिष्टांन्नकोस्वादकहाराड़ी
में । गावतगुणचतुरदासमानलेगोपालजीको मतिना
बिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ६ ऐरेऐअचेतचेतमानोम
धुसूदनको ताहीकोमानआजभक्तिनिजठानीमें । वाही
कीज्योतिजड़चेतनमेंदमकिरही वाहीकीज्योतिनिजरा
जाऔररानीमें॥वाहीकीज्योतिशशिसूर्य्यमेंप्रकाशभईवा
हीकीज्योतिनिजदेखलेअसाड़ीमें। गावतगुणचतुरदास
मानलेगोपालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ी
में ७ मेरामेराकरतयहांरावणसेकोटिगये कर्णभयाना
मीऔगरामीनिजदानीमें । योधानिजअर्जुनकाबाणहू
नचलेयहां धन्वन्तरिसानहींभयाजक्कबीचसानीमें ॥ नि
म्बार्कनामीनिरबाणीतूमानतना ऐरेहेमूरखतूफँसाहैअ
नाड़ीमें । गावतगुणचतुरदासमानलेगोपालजीको म
तिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ८ करलेसतसङ्गरङ्ग

लागैमनमोहनको छोड़देकुसङ्गसङ्गबैठोनाअनाड़ीमें। कौड़सिपैसाकरपैसेसेरुपैयामोहरजोड़जोड़भरेमूढ़नाहक तूहांड़ीमें॥ आवेगादूततोहिंबांधकेअगाड़ीकरेखावखर्च दानदेनचलैगीअगाड़ीमें।गावतगुणचतुरदासमानरेगो पालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ६ गुरुके प्रतापज्ञानध्यानकोप्रकाशभयोनामहूकोपुष्पखिल्योहिर दाकीबाड़ीमें।दम्भिनकोमानेऔरठानेमनमत्तमत्तझूठ हूकाभुण्डउड़ैदम्भिनकीबाड़ीमें॥ झूठकोउड़ायनाथसा गरमैंबोरदेवो धूरकोनखावनाथदुष्टनकीडाड़ीमें ।गावत गुणचतुरदासमानलेगोपालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौ लौंजीवनाड़ीमें १० मानब्रजराजचरणशरणलियोसन्त नकोनामकेप्रतापसाहसकरैगोअगाड़ीमें।मेरेबनवारीगि रिधारीबिहारीलालराधामधुसूदनकोप्रेमसेपिछानीमें॥क हतहूंपुकारमेरोलेरेउपदेशआय पौंड़ेकोछोड़ेनास्वादमूढ़ राड़ीमें । गावतगुणचतुरदासमानलेगोपालजीको म तिनाबिसारमूढ़जौलौंजीवनाड़ीमें ११ सर्वेश्वरप्यारेनि जसन्तनरखवारे जायकेबिराजेहोसलेमाकीझाड़ीमें । हाथजोड़नाथतेरीमहिमाउचारकरूं तेरीलेभक्तीप्रियचा तुरपुकारीमें ॥ रत्नपुरीकरनिवासरामगङ्गहूकेपास तो कोनाबिसारूंनाथजौलौंदेहठाड़ीमें । गावतगुणचतुर दासमानलेगोपालजीको मतिनाबिसारमूढ़जौलौंजीव नाड़ीमें १२ ॥ दोहा ॥ बैठोथोमनमौजधर देतोथोमन ज्ञान । ताहिसमयइकदुष्टने प्रश्नकियोतेहिआन ॥ कवित्त ॥ दम्भीएकआयकेप्रसिद्धभेदपूछतहै कहो

सन्तआजआपदेहक्योंप्रजारीहै । याकेजलायेसेकहो
कहामोक्षहोय देहकोजलावेदोषयाकोअतिभारीहै ॥ ऋ
षीपितृदेवहूकेरहेनहींकारजके कर्मकाण्डवालोंनेआला
ललकारीहै । अदमहूकीसुनीबातचातुरपुकारकहे द
म्भिनयहभूठभूठभूठीविस्तारीहै १३ लेतहैंजोमु
द्रासोमोक्षपदपावतहैं गावतहैंवेदचार मोहरहरिनाम
की । चतुराननअङ्कतेरेभालपैनिशङ्कलिखे ताहीपैस
होमैरप्यारेहरिधामकी ॥ कण्ठीऔरतिलककीनिशांनी
निजकागजपर ताहीकोदेखयमपूछतनाग्रामकी। करत
जनचातुरनिशङ्कबाधदम्भिनको कागजनिजदेहपैप्रसि
द्धमोरशामकी १४ अगनीमहारानीसबवेदमेंबखानी
अगनीसेनाहिंबच्योप्राणीकोउजहानमें । पाककोबनावै
करअग्नीबीचदग्धहोय डामकोलगायमूढ़गाजतहैंमा
नमें ॥ तेरेघरबीचमरेताकोतौनाजलाव जल्योहतोनरक
जायकहीतैंनेतानमें । गावतगुणचतुरदासलेरेनिशङ्क
छापपापतेरोदूरहोवेचढ़ेगोबिमानमें १५ धेनुहूकाबच्छा
पैशशीसूरअङ्कितहोय ताहीमर्य्यादनहींजोतैकोउगाड़ी
में । चारखूंटबीचमेंडकारतानिशङ्कफिरै अङ्कितहो
लोटपोटचरेहरियाड़ीमें ॥ धेनुरूपभक्तिकेसपूतपूतसन्त
जान छापकेप्रतापरहेमोहनकीबाड़ीमें । गावतगुणच
तुरदासछापलेनिशङ्कगाज तेराहूनबालखसेदम्भिनकी
झाड़ीमें १६ जाकेपितृनरकजायसोहीसबकर्मकरै हमा
रेतोपित्रप्रियस्वर्गकेनिवासीहैं । वैष्णवकेहोतहीतरी
हैंअनेकपीढ़ी मैंतोहूंब्रह्मप्यारादेहमेरीदासीहै ॥ हरीग

रुभक्तिअरुभक्तकोनमानकरे ताकीयमराजघराहोतबहु
हासीहै। गावतगुणचतुरदासछापलोनिशङ्कअङ्ग राधा
मनमोहनजीमेरेअविनासीहै १७ अङ्ककोससरिदेख
यमहूकीतापनहीं छापहूकोदेखियमकिङ्करघबरावेहै।
अङ्ककेप्रतापसेनिशङ्कहोवपापीजीव भुजहूपैअङ्कदेख
देवतासरावेहै। अङ्कितकोनिंदैअरुमानैनहींसन्तन
को ताहीकीखालहरीभुसतोभरावेहै॥ गावतगुणचतुर
दासद्धारकाकीछापलेवो सोतोनरधन्यप्यारोपापकोज
लावेहै १८ रामानुजबैष्णवनित्रवेदीरचिशिष्यनको प
हिलेदेछापफिरदेतहरिनामको। निम्बारकबिष्णुअरुमा
धवअनुसारप्यारे शीतललेमुद्राजनजातहरिधामको॥
जनमेजोनीचयहांसोतोनहींलेवेंछाप मुद्रानहिंलेवेंसोतो
जावेंयमग्रामको। गावतगुणचतुरदासदेवअंशछापले
वे यमनाप्रमाणकरेबिनाछापचामको १९ ऐरेऐदम्भी
तूतोछापलेनिशङ्कअङ्ग निश्चयमोहरसहीगोबिंदकेनाम
की। कागजअङ्गतेरापरअङ्कलिखेचतुरानन करतेहैंस
हीश्रीगोबिन्दजीकेधामकी॥ अम्मरलेपद्यानिजहंसागु
रुसङ्गपाय तबहींमिलैगीसुधिमोहनघनश्यामकी।
गावतगुणचतुरदासलेरेपरवानामूढ़ महीपैबढ़ायमूत्रभ
क्तिकरोरामकी २० तेरेनहींदोषदम्भीबीजमाहिंभेरभ
यो तातेहरिअङ्कितकीनिन्दामनधारीहै। गेहूंकीजुवा
रीऔजुवारीकेगेहूंना जामैंनिजबीजहीपैदम्भीअसुरारी
है॥ नदीजायँसागरमेंसागरनागर्वकरै ओछातालगर्व
करैउड़ैधुरभारीहै। गावतगुणचतुरदासदम्भीधिक्कार

तोहिं गावोगोविन्दतिहुंलोककोबिहारीहै २१ लेरेपर
वानागोविन्दकीकचहरीआय पट्टानिजलेहचारोंमुक्ती
कोपावेगो। कचहरीकेपरसतहीपापतोबिलायजाय सं
गकेपावतहीनांमतूउचारैगो॥ तनमनसेमानप्यारेसंत
नकीसेवाकरो मुक्तीपरवानानिजसाधूपरखावैगो। गाव
तगुणचतुरदासमानोजगजीवनको चढ़केबिमानहरिलो
कतूसिधावैगो २२ लेरेशमशेरहाथमानहींकोमारदेवो
भक्तीकोठानएकसांच्योहरिनामहै। क्रोधकोजलायदेवो
ज्ञानहूकीजठरामें लोभकोघटावसाथआवेनहींदामहै॥
मदमच्छरकोमारप्यारेगर्वकोघटायदेवो साधनकेसङ्गबै
ठठेरत्नकोठामहै। गावतगुणचतुरदासमानरेगोपालजी
को वाकोगऊलोकअरुगोकुलमुकामहै २३ शीलहूको
सङ्गकरहंसाकोतारदेवो लेरेगोबिन्दनामनिरभयतूगाज
के। निश्चयकरदेखप्यारेगावतहैंवेदजाको ताकोतूजोव
मूढ़ज्ञानज्योतिसाजके॥ तमोगुणकोत्यागप्यारेसतोगु
णसमीपरेवो दुनियाकोतारदेवोसाधूजनबाजके। गाव
तगुणचतुरदासमानरेगोपालजीको सुमिरैनाहिंमूढ़अंत
जावेकहांभाजके २४ विक्रमीहैसालएकतापरशिवनेत्रमा
न तीनहूपैनोबखानसाधूनिजगावेहै। अषाढ़कृष्णअष्ट
मीबारदित्यस्वामीको गाईपच्चीसीगुरुचरणशीशनावे
है॥ जयजयगोपाललालतेरादासानुदास रत्नपुरीकर
निवासतेरेकोचावेहै। गावतगुणचतुरदाससेवकनिम्बा
रकको श्रीसरवेश्वरस्वामीकोप्रेमहूसेध्यावेहै २५॥
इतिचतुरदासकृतमहिमापचीसीसमाप्तम्॥